उद्देश्य विस्तार +उद्देश्य	कर्म विस्तारक	कर्म	क्रिया विस्तार (क्रिया विशेषण)	क्रिया
उप-प्राचार्य ने	विजेता	खिलाड़ियों को	अपने पास	बुलाया

क्रिया विशेषण उपवाक्य है तथा योजक – 'तो'

उद्देश्य+उद्देश्य विस्तारक	कारकीय पद	क्रिया विस्तार	क्रिया
सारी-छुट्टी	कालेज में (अधिकरण)	जब (क्रिया विशेषण)	हुई

उदाहरण 4. जिन्होंने शीशा तोड़ा था उन्हें बुलाया जाए ।

प्रधान वाक्य. – उन्हें बुलाया जाए ।

आश्रित उपवाक्य – जिन्होंने शीशा तोड़ा था (विशेषण उपवाक्य)

उद्देश्य	विधेय/क्रिया
उन्हें	बुलाया जाए

उद्देश्य	कर्म	क्रिया
जिन्होंने	शीशा	तोड़ा था

उदाहरण 5. रीमा के दादा ने देखा कि वे लड़के आ गए हैं जिन्हें आना था

रीमा के दादा ने देखा (प्रधान उपवाक्य)

वे लड़के आ गए हैं (संज्ञा उप वाक्य)

जिन्हें आना था, (विशेषण उपवाक्य)

कि (योजक)

इकाई 4

यहाँ से शुरू करे

6:12 वाक्य परिवर्तन : कारण

1

भाषा में परिवर्तन की गति धीरे भले ही हो, कभी रुकती नहीं । वैदिक संस्कृत से आज तक हिन्दी भाषा में परिवर्तन को स्पष्ट देखा जा सकता है । ध्वनि, शब्द, पद के स्तर पर तो परिवर्तन होता ही है, वाक्य भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहता । वाक्य परिवर्तन के पीछे कई कारण हैं जिनका विवेचन इस प्रकार किया जा सकता है।

कारण :-

1. सरलता की अपेक्षा अथवा प्रयत्न लाघव :- जिस प्रकार पद विज्ञान के अन्तर्गत 'उपाध्याय' से 'ओझा' फिर 'झा', बना तो 'वन्दोपाध्याय' से 'बैनर्जी' बना । इसी प्रकार ध्वनि स्तर पर भी स्वनागम, स्वन लोप आदि ध्वनि परिवर्तन का कारण बना । कोकिल से 'कोइल' हुआ तो 'आम्र से 'आम' बना लिया गया । मृच्छकटिका' से मिट्टी की गाड़ी बोलना कहीं ज्यादा सरल लगा । उसी प्रकार वाक्य को सरल बनाने के पीछे भी प्रयत्न लाघव काम करता रहा है। कोई पूछे- बाहर कौन शोर कर रहा है? उत्तर दिया जाता है 'बच्चे'। मास्टर जी पूछता है 'आज दूध कौन लाएगा? उत्तर मिलता है 'रमेश'। पूछा जाता है -तुम परसों उदयपुर जाओगे? उत्तर मिलता है 'नहीं' । इसी प्रकार बैठिए, उठिए, जाइए, आओ, जा, बैठ, क्या, क्यों आदि कुछ ऐसे वाक्य बन जाते हैं जिनमें 'कर्ता-कर्म-क्रिया का ध्यान रखे बिना प्रतिदिन हम विचार विमर्ष करते हुए सहजता से अपना काम चला लेते हैं । अतः कहीं अकेली क्रिया 'जाऊँगा', कहीं एक निषेधात्मक अव्यय 'न, नहीं' या फिर 'हाँ, अच्छा, मैं, हम' आदि कह कर पूर्ण वाक्य का काम हम इन्हीं से ले लेते हैं तथा भाव व अर्थ भी पूर्णतः प्रकट हो जाता है । अतः प्रयत्न लाघव वाक्य परिवर्तन का मुख्य कारण है।

2. बलाघात :- बलाघात भी वाक्य परिवर्तन का प्रमुख कारण बनता है । जैसे कोई कहे – उसे घर जाने दो ' यदि जाने पर बल है तो अवश्य ही अर्थ होगा कि उसे घर जाने से रोकना नहीं । 'तुम घर जाओगे क्या ? मोहन ने रेडियो 'सुन' लिया क्या ?, क्या सोनिया भी चल रही है हमारे साथ? मैं रूकूँ क्या ? " इस प्रकार रेखांकित पदों पर बल देकर वाक्य से एक निश्चित अर्थ व भाव को प्रकट करने के लिए वक्ता वाक्यों में परिवर्तन कर लेता है । भावावेश की स्थिति में वाक्य परिवर्तन स्वाभाविक है- वह बेचारी तो अब 'लुट' गई, अब उसके पास देने को बचा ही क्या है? कहने को तो सब कहते हैं, परन्तु इन परिस्थितियों में उसे सहारा देगा कौन? देखता हूँ मैं, कैसे नहीं देता? आदि ।

3. स्पष्टता :- कभी-कभी कोई वक्ता अपनी बात को समझाने व और अधिक स्पष्ट करने के लिए एक के बाद एक करके कई वाक्यों को कोमा, विरामचिह्न आदि से जोड़ता चला जाता है । इस प्रकर की स्पष्टता लाने की नीति से भी वाक्य परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है । जैसे – " यदि मैं दिल्ली गया और वहाँ सीता मिली, उसने मुझे मनाने की कोशिश की, तो अवश्य ही मैं सीता को रमेश के लिए मनाने का प्रयास करूँगा। यह उन दोनों के हित में ही होगा और पूरे परिवार के भी ।"

4. अज्ञानता :- अज्ञानता भी वाक्य परिवर्तन का कारण है । विशेषण का प्रयोग विशेष्य के अनुरूप हो तथा विशेष्य से पूर्व उसका प्रयोग होना चाहिए , परन्तु अज्ञानता वश प्रयोग कर दिया जाता है' इस रूप में – राधा ने एक फूलों की माला मोहन को पहनाई यहाँ एक विशेषण' होना चाहिए था 'माला के साथ' पर कर दिया गया 'फूलों ' के साथ जो अशुद्ध है । 'उसने भाषण दिया, प्रयोग में लाया जा रहा है जबकि यहां होना चाहिए भाषण किया; इसी प्रकार ' प्राचार्य ने छात्रों को धन्यवाद दिया' के स्थान पर 'धन्यवाद किया' होना चाहिए; लेकिन वर्तमान में 'भाषण दिया व धन्यवाद दिया' वाक्य प्रचलन में हैं । इसी प्रकार 'मुझसे' न कहकर 'मेरे से' कहना भी अज्ञानता का सूचक है । निरर्थक अवयवों की जानकारी न होने से भी वाक्य परिवर्तन की परिस्थितियाँ पैदा हो

जाती हैं ।

5. **भावुकता** :- भावुकता वश भी पदों में परिवर्तन होता है और उसी प्रकार वाक्यों में भी । भावुकता में व्यक्ति जब किसी विचार या भाव में बह निकलता है तो उस द्वारा प्रयोग में लाए गए वाक्यों में व्याकरणिक अनुशासन का बने रहना बहतु मुश्किल होता है । वक्ता भावुकता की स्थिति में शान्तमय ढंग से जो भी विचार-भाव उसके मन में आता है, व्याकरणिक नियमों की परवाह न करते हुए वाक्यों में प्रयुक्त कर देता है । जैसे -आह! कितनी सुन्दर थी वह । न जाने कब से खड़ा था वह, उसे निहारने, पल भर के लिए। ''प्रभु! आए भी तो आप किस रूप में । आपके दर्शन इस रूप में होंगे, कभी सोचा भी न था मैंने ।'' तुम्हीं हो सर्जनहार इस सुन्दर संसार के। तुम्हारी माया के बिना ऐसा सुन्दर संसार भला सजा भी कौन सकता है।''

6. **मानसिक स्थिति** :- मानसिक स्थिति भी वाक्य परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। भावुकता में व सुख-दुःख में व्यक्ति की मानसिक स्थिति कुछ बदली सी होती है । बच्चे और प्रौढ़ व्यक्ति की मानसिकता में अन्तर होता है । युवा व वृद्ध की मानसिकता में भी अन्तर होता है । राजनेता व धार्मिक नेता की मानसिकता में भी अन्तर होता है । अत: मानसिकता के अनुरूप वाक्य परिवर्तन हो जाता है - हारा हुआ राजनेता कहेगा - 'जनता-जनादेश सर-आँखों पर, अब जनता जहाँ बैठाना चाहती है वहीं बैठूँगा। ' परिणाम आने से पूर्व एग्जिट पोल को देखकर कहेगा ' यह सब हमारी धर्म निरपेक्ष नीतियों का परिणाम है जो जनता 10 वर्ष बाद भी हमें जनादेश देकर सिर आँखों पर बैठाना चाहती है ।'' अब हमारी सरकार ऐसी साम्प्रदायिक ताकतों का देश से सफाया कर छोड़ेगी। ऐसी ताकतें समाज व राष्ट्र का हित कम अहित ज्यादा करती हैं ।'' उधर सरकार बदलते ही बेरोजगार युवक की मानसिकता बदलने लगती है । धार्मिक पण्डे और मौलवी भी शान्तमय प्रवचन देना शुरू कर देते हैं । क्रोध, शान्ति, स्वागत-सत्कार आदि की स्थिति में वाक्य परिवर्तन सहजता से देखा जा सकता है ।

7. **बाह्य कारण** :- जैसे विदेशी शासन, भाषा व सांस्कृतिक प्रभाव भी किसी भाषा की वाक्य रचना को प्रभावित किए बिना नहीं रहते । आज अंग्रेजी भाषा के वाक्यों की तर्ज पर पढ़े-लिखे नागरिक हिन्दी वाक्यों का प्रयोग भी उसी प्रकार करते दिखाई पड़ते हैं जैसे आज हिन्दी भाषा-भाषी- ''दो मजदूरों की आवश्यकता है, आज हमें परिश्रमी किसानों की जरूरत है; आदि न बोलकर कहता - आवश्यकता है , दो मजदूरों की; आज हमें जरूरत है परिश्रमी किसानों की' यह सब अंग्रेजी भाषा के प्रभाव के परिणाम स्वरूप हआ है । प्रशासनिक व कार्यालयी कामकाज में यह प्रभाव और भी स्पष्टता से देखा जा सकता है।

8. **परम्परा** :- पूर्व परम्परा भी वाक्य परिवर्तन का कारण बनती है । संस्कृत में वाक्यांतर्गत, 'तीन वचन, तीन लिंग का प्रयोग होता था' जो बाद की 'पालि-प्राकृत-अपभ्रंश भाषाओं में तीन का प्रयोग नहीं रहा, उस परम्परा की तर्ज पर हिन्दी भाषा में भी तीन की जगह दो लिंगों का प्रयोग ही जारी रहा' क्योंकि प्राकृत भाषाओं की परम्परा का प्रभाव हिन्दी पर पड़ा । इसी प्रकार संस्कृत भाषा में आदर-सत्कार के लिए 'एक वचन' संज्ञा सर्वनाम, के लिए बहुवचन का प्रयोग प्रचलित था, तो परम्परानुकूल हिन्दी भाषा में आज तक 'हम 'आप आदि बहुवचन रूपों का प्रयोग सम्मान देने हेतु करते हैं यथा- 'नेता जी आ रहे हैं, गुरुदेव सो रहें हैं, आप कब आ रहे हैं हमारे यहाँ, आदि ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वाक्यों में परवितर्न के लिए उपर्युक्त कारण जिम्मेदार हैं । इनके अतिरिक्त भी विचलन, अनुकरण, स्थानीय लोक भाषा का प्रभाव, ज्ञान-विज्ञान की बढ़ती माँग आदि से भी बोलने वाला वाक्यों में परिवर्तन कर छोड़ता है । वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी का युग है । मीडिया सर्वत्र छाया हुआ है। बाह्य चैनल के (पाश्चात्य) कार्यक्रम हिन्दी में अनुदित करके दिखाए जा रहें है । दूरदर्शन व पत्रकारिता ने भी वाक्य परितर्वन को खूब बढ़ावा दिया है ।

6:13 वाक्य परिवर्तन की दिशाएँ

वाक्य परिवर्तन की दिशाओं के अन्तर्गत प्रमुख हैं- पदक्रम, अन्वय, उपवाक्य, निकटस्थ अवयव, पद-प्रत्यय लोप, अधिक पद प्रयोग, विराम चिह्न आदि सम्बन्धी परिवर्तन का होना ।

1. **पदक्रम** :- पद क्रम की दृष्टि से वाक्य-परिवर्तन एक मुख्य परिवर्तन की दिशा है । विभिन्न भाषाओं में पदक्रम योजना वाक्यों के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न हुआ करती है । संस्कृत की पदक्रम व्यवस्था, रूसी-चीनी व हिन्दी, अंग्रेजी की पदक्रम व्यवस्था एक नहीं है । संस्कृत संयोगात्मक भाषा है अत: इसमें कोई पद (वाक्य में) कहीं भी रख दें अर्थ एक समान रहता है। उसमें - रामः पुस्तक पठन्ती । पुस्तकं पठन्ती रामः । पठन्ती पुस्तकं रामः आदि वाक्य के पदों को किसी भी स्थिति में रखें' अर्थ होगा ''राम पुस्तक पढ़ता है।'' परन्तु हिन्दी में पदक्रम कर्ता + क्रम + क्रिया' का है । इसमें कर्म को कर्ता के स्थान पर रखते ही अर्थ बदल जाता है। अंग्रेजी में जो पद योजना है वह हिन्दी पर लागू नहीं की जा सकती । फिर भी आजकल 'पदक्रम' का विचलन जारी है और परिवर्तित वाक्यों का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है -जैसे कहानी एक किसान की ।, देखा उसे दीवार फाँदते हुए । 'नाके लगाए हैं पुलिस ने जगह-जगह ।'' नाक में दम ला दिया है बिजली के कट ने ।'' केवल 100 रुपये' कहने की बजाय कहा जाता है 'सौ रुपये केवल आदि। 'ये हैं श्री प्रकाश कालिया' न कहकर लिखा जाता है 'कालिया, आर. पी. सिंह, डॉ. बी. एस.

आदि के स्थान पर 'सिंह डॉ. बी.एस. लिखना ज्यादा प्रचलित हो गया ।

2. **अन्वय** :- व्याकरणिक नियम बद्धता व वाक्य में प्रयुक्त पदों का परस्पर मेल होना आवश्यक है । कर्ता व कर्म के अनुरूप क्रिया के लिंग, वचन आदि होने चाहिएं । विशेष्य के अनुरूप विशेषण का प्रयोग होना चाहिए, लेकिन आज इनका प्रयोग भी बदल कर किया जाने लगा है । होता तो था ' माननीया अध्यक्षा महोदया, आदरणीया मोसी जी' का प्रयोग, लेकिन अब होने लगा है -' माननीय अध्यक्ष महोदया अथवा माननीय अध्यक्ष महोदय श्रीमती डॉ. गौतम जी आदरणीय मौसी जी, श्रीमती शीला दीक्षित जी आदि । आज संसद सदस्या' न कहकर' स्त्रीलिंग के लिए भी संसद सदस्य 'श्रीमती कृष्णा राठी जी' ही प्रचलित हो गया है । 'कन्या सुशीला' होती है, लेकिन लिखा जाता है पुलिंग की तरह "कन्या बडी सुशील है ।"

3. **निकटस्थ अवयव की दृष्टि** से भी वाक्य में परिवर्तन हो जाता है । वाक्य में परस्पर पदों का अन्वय निकटस्थ अवयव की दृष्टि से ही होना चाहिए । जो पद अर्थ की दृष्टि से एक दूसरे के जितने समीप होंगे वे ही निकटस्थ अवयव कहलाएंगे। ऐसे पद वाक्य में स्थान की दृष्टि से बेशक दूर-दूर क्यों न रखे गए हों । जैसे कोई कहे - भाषा विज्ञान का हिन्दी भाषा के विकास में अनूठा योगदान है । "इस वाक्य में निकटस्थ अवयव को ठीक नहीं रखा गया , वैसे देखने में यह वाक्य ठीक लगता है लेकिन है अशुद्ध, क्योंकि भाषा विज्ञान योगदान का निकटस्थ अवयव है ' अत: होना चाहिए' हिन्दी भाषा के विकास में भाषा विज्ञान का योगदान अनूठा है । इसी प्रकार यह वाक्य देखें - 'जा रहा हूं आज दिल्ली, सीता को मनाने मैं पदक्रम की दृष्टि से व निकटस्थ अवयव की दृष्टि से यह वाक्य परिवर्तन हो गया है। भले ही बलात्मकता की दृष्टि से 'कर्ता' बाद में आ गया पर इसे होना चाहिए था ' मैं सीता को मनाने आज दिल्ली जा रहा हूँ ।"

4. **पद या प्रत्यय लोप** से भी वाक्य में परिवर्तन हो जाता है । मुख-सुख सुविधा के अन्तर्गत इस प्रकार के वाक्यों के परिवर्तन को भली भाँति समझा जा सकता है । जैसे- मैं इस वजन को नहीं उठा सकता हूँ, मैं इस कार्य को पूरा नहीं कर सकता हूँ ; आदि को 'मैं इस कार्य को पूरा नहीं कर सकता' लिखते हैं जिसमें 'हूँ ' क्रिया लुप्त हो गई। गिलास को किसने तोड़ा है ? - रमेश ने । यहाँ, 'गिलास पद (कर्म) के साथ-साथ 'क्रिया' का भी लोप हो गया इस प्रकार वाक्य परिवर्तन होना सामान्य बात है ।

5. **आदर सत्कार** के भाव से भी वाक्य - के स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है। आज हम माता, पिता, गुरु, प्रतिष्ठित नेता, मंत्री, समाज सेवी' आदि के लिए आदर वश एक वचन से बहुवचन का प्रयोग करते हैं । एक व्यक्ति के लिए 'तुम' न कह कर 'आप'

प्रयोग करते हैं । अत: सर्वनाम 'आप' वे' आदि का ही प्रयोग होने लगा है । जैसे - आप कल आओगे । आप के साथ वे (मन्त्री जी) भी आएंगे क्या ? गुरु देव आ रहें हैं नहीं । माता जी मन्दिर गई हैं । आदि ।

6. वाक्य परिवर्तन की एक अन्य दिशा है **उपवाक्यों में परिवर्तन** करके वाक्य स्वरूप को परिवर्तित करना । जैसे - मोहन कक्षा में प्रथम आया था । वाक्य को इस प्रकार कहें - यह वही मोंहन है जो कक्षा में प्रथम आया था ।" सोनिया पीली साड़ी पहन कर आयी ।" यह वही सोनिया है जो पीली साड़ी पहन कर आयी थी । कहना तो चाहिए था 'जिनके लेक्चर कम हैं उन्हे रोल न0 नहीं मिलेगा "और कहें यों कि' वे लडके जिनके लैक्चर कम हैं उन्हें रोल न0 नहीं मिलेगा आदि इसी प्रकार- आम! जो आज कल बिक रहे हैं बहुत कच्चे हैं । 'वे जिन्हें पुलिस पकड़ ले गई, पक्के बदमाश हैं आदि। अत: उपवाक्यों के परिवर्तन से भी वाक्य संरचना में परिवर्तन हो जाता है ।

7. **अनुवाद** :- आजकल ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं को हिन्दी में लाने हेतु पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हो रहा है । कार्यालयी अथवा कामकाजी हिन्दी में अनुवाद का सहारा लिया जा रहा है । इस प्रकार अंग्रेजी वाक्यों का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है । जैसा कि डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा ने कहा है कि 'कार्यालयीय व्यवहार-से भाषा में सैकड़ों ऐसे वाक्य हिन्दी में प्रचार पा गए हैं, जो अंग्रेजी वाक्यों के अनुवाद हैं जैसे - कृपया इस पत्र का उत्तर लौटती डाक से तत्काल दीजिए ।' यह वाक्य अंग्रेजी के - Please reply this letter immediately by return of post. का रूपान्तरण है ।, इसी प्रकार - मैं इस पत्र के द्वारा अपनी स्वीकृति सम्प्रेषित कर रहा हूँ । 'अंग्रेजी के वाक्य I am hereby conveying my acceptance" का हिन्दी अनुवाद है । " [97]

8. कभी-कभी **एक से अधिक पदों का** प्रयोग कर देने से भी वाक्य में परिवर्तन हो जाता है । डॉ. रत्न चन्द्र शर्मा ने इस प्रकार के अच्छे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जैसे - वास्तविकत में मोहन बीमार है । " यहाँ 'में' का प्रयोग अनावयश्क और अनुपयुक्त है । इसी प्रकार - "वह न तो पढने में ही अच्छा है और न खेलने में ही अच्छा है " यहाँ दूसरी बार लिखा गया 'अच्छा है' पुनरावृत्ति होने के कारण अनुपयुक्त है "

इस प्रकार हम देखते हैं कि वाक्य परिवर्तन की उपर्युक्त दिशाओं के अतिरिक्त भी 'प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष' कथन द्वारा जैसे मैं पढ़ता हूँ मुझसे पढा जाता है। मोहन गिटार बजा रहा है - मोहन से गिटार बजाया जाता है अथवा मोहन से गिटार नहीं बजाया जाता' आदि कहना भी वाक्य परिवर्तन की एक दिशा है । अन्य भाषा के प्रभाव से पूर्ण विराम, अल्पविराम, डैश, कोमा आदि का प्रयोग कर भी वाक्य परिवर्तन की ओर लेखक कदम बढ़ाते जा रहे हैं । कभी-कभी किसी विशेष बात को स्पष्ट करने हेतु उसका दूसरा पर्याय अथवा